GENERAL PSYCHOLOGY

B.A. (Hons & Subsidiary) Part-I

Paper-I

Dr. Rawendra Kumar Singh
HOD of Psychology
D. K. College, Dumraon
(Buxar)
VKSU, Ara (Bhojpur) Bihar

प्रश्न :- व्यक्तित्व के जैविक निर्धारकों की व्याख्या कीजिए।
(Explain the Biological factors of Personality)

व्यक्तित्व एक सामान्य शब्द है जिसका प्रयोग प्रायः ही हम अपने दैनिक जीवन में करते हैं। अमूमतौर पर व्यक्तित्व से तात्पर्य हम लोग व्यक्ति की शारीरिक बनावट वेश-भूषा, रंग-रूप आदि से लगाते हैं, पर यह सतही सोच है। कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो व्यक्ति की आंतरिक पक्षों यथा बुद्धि, स्वभाव, आदि अन्य शीलगुणों के आधार पर व्यक्तित्व की व्याख्या करते हैं। वास्तव में उपर्युक्त दोनों ही विचारधाराएँ एकपक्षीय है। आधुनिक मनोवैज्ञानिक आजकल व्यक्तित्व की व्याख्या में आंतरिक एवं बाह्य दोनों पक्षों की तरजीह दे रहें हैं और समाकलित (Integrated) महत्व दे रहे हैं। व्यक्तित्व को मनोदैहिक गुणों का गत्यात्मक संगठन मानते हैं। व्यक्तित्व का विकास या निर्माण विभिन्न अवस्थाओं में होता है जिसपर कुछ कारकों का प्रभाव पड़ता है, जिन्हें हम व्यक्तित्व के निर्धारक कहते हैं। व्यक्तित्व के निर्धारकों को हम दो श्रेणियों (जैविक और पर्यावरणीय) में रखते हैं। प्रश्न के आलोक में यहाँ हम जैविक निर्धारकों की व्याख्या करेंगे

Scanned By Scanner Go

व्यक्तित्व के जैविक निर्धारक - व्यक्तित्व के जैविक निर्धारक से तात्पर्य उन तत्वों या कारकों से है जो अनुवंशिक रूप से प्राप्त होते हैं तथा व्यक्तित्व के विकास को प्रभावित करते हैं। यानी ये ऐसे गुण हैं जो जन्मजात होते हैं तथा व्यक्तित्व के विकास में अहम् भूमिका निभाते हैं। व्यक्तित्व विभिन्न मनोदैहिक गुणों का संगठन है और यह संगठन जिन बातों पर निर्भर करता है, उसे ही व्यक्तित्व के निर्धारक कहा जाता है। जहाँ तक व्यक्तित्व के जैविक निर्धारकों का प्रश्न है तो इसके अन्तर्गत निम्नलिखित कारक आते हैं :-

(i) **शारीरिक रचना (Physique)** :- शारीरिक रचना अथवा शारीरिक गठन से तात्पर्य एक व्यक्ति विशेष के शारीरिक बनावट, स्वास्थ्य, रूप रंग, आकार प्रकार आदि से है। आमतौर पर यह देखा जाता है जिन लोगों की शारीरिक बनावट सुडौल होती है वे स्वस्थ होते हैं। ऐसे लोगों के प्रति समाज का नजरिया संतुलित सुडौल होते हैं काफी संतुलित होता है। उन सभी कारणों से उनका आत्मविश्वास सुदृढ़ होता है, समायोजन में मदद मिलती है। सामान्यतः शारीरिक रचना वंशानुक्रम या वंश से मिली विरासत होती है, जो जिन्स के माध्यम से आती है। अच्छे शारीरिक डील डौल वाले सुन्दर एवं स्वस्थ व्यक्ति को समाज में Interaction का अधिक मौका मिलता है। इससे उनके व्यक्तित्व में निखार आने की संभावना अधिक होती है। दूसरी तरफ नाटे और कुरूप लोगों कई तरह की ग्रंथियों (Complexes) के शिकार हो जाते हैं। उनका व्यक्तित्व कुंठित हो जाता है फिर शारीरिक गठन कोई ऐसा आईना नहीं है जिसमें व्यक्तित्व का सही और स्पष्ट रूप प्रतिबिम्बित

Scanned By Scanner Go

हो सके 'शारीरिक विकास गठन पर लोगों द्वारा मिलने वाली प्रतिक्रियाएँ व्यक्तित्व विकास में कुछ हद तक सहायक हो सकती है, लेकिन यही एक मात्र कारक नहीं है।

(iii) शारीरिक रसायन एवं अन्तःस्रावी ग्रंथियाँ (Bodily chemistry and endocrine glands) :- व्यक्ति के शरीर में रासायनिक परिवर्तन होते रहते हैं जिसका प्रभाव व्यक्ति की क्रियाओं पर पड़ता है। इन रासायनिक परिवर्तनों पर नियंत्रण हमारे शरीर में मौजूद ग्रंथियों (Glands) द्वारा होता है। इसमें Endocrine glands का महत्वपूर्ण योगदान होता है। अन्तःस्रावी ग्रंथियों से तात्पर्य उन ग्रंथियों से है जिनसे निकला स्राव शरीर के अन्दर ही रह जाता है और उनसे निकलने वाला स्राव हार्मोंस (Hormones) कहलाता है। ये ऐसे स्राव (हार्मोंस) हमारे खून में मिलकर व्यक्तित्व के विकास में सहायक होते हैं। जब इन ग्रंथियों से निकलने वाला स्राव संतुलित मात्रा में निकलता है तब उचित (संतुलित) व्यक्तित्व का विकास होता है। अन्तःस्रावी ग्रंथियां नलिकाविहित (Ductless) होती है। इसके तहत निम्न Glands आते हैं :-

(a) थाइरायड ग्रंथियाँ (Thyroid glands) :- यह गले के नीचे स्थित होने वाली Glands होती है जिससे Thyroxin नामक स्राव (हार्मोंस) निकलता है। इनका संतुलित स्राव शारीरिक एवं मानसिक विकास के लिए आवश्यक है। इनका अधिक स्राव होने पर पर शरीर मोटा थुलथुला हो जाता है और कम स्राव होने पर व्यक्ति पतला, कमजोर, बौना हो जाता है। हृदय, श्वसन रक्तचाप आदि पर भी प्रभाव डालता है। अतः इनका संतुलित स्राव व्यक्तित्व के उचित विकास के लिए आवश्यक है।

(b) पीयूष ग्रंथियाँ (Pituitary glands) :- यह Master gland कहलाता है, क्योंकि अन्य ग्रंथियों पर इसका नियंत्रण होता है। जब बचपन में इसका स्राव अधिक होता है तो बच्चा अधिक लम्बा हो जाता है जब स्राव कम होता है तो बौना हो जाता है।

Scanned By Scanner Go

इस gland का प्रभाव रक्तचाप आदि पर भी पड़ता है।

एड्रीनल ग्लैंड्स :- यह गुर्दे के ऊपर अवस्थित होता है। इससे निकले स्राव को Adrenalin कहा जाता है। इसका स्राव जब अधिक मात्रा में खून में मिलता है तब रक्तचाप, हृदय की गति, साँस की गति तेज हो जाती है जिससे हम अधिक उत्तेजना अनुभव करने लगते हैं। इससे निकले हार्मोंस का संवेग (भय, क्रोध) और आपात स्थिति से गहरा सम्बन्ध है। इसे Emergency harmons भी कहते हैं। एड्रीनल ग्रंथि से कार्टीन हार्मोंस के अधिक स्राव होने पर स्त्री पुरुष की दाढ़ी-मूँछ निकल जाती है। मरदाना लक्षण विकसित हो जाता है। बच्चों में यौन आगमन पहले हो जाता है।

यौन ग्रंथि (Sex glands) :- यौनांगों का विकास यौन ग्रंथियों से निकलने वाला स्राव पर निर्भर करता है। पुरुषत्व एवं स्त्रैण गुणों के विकास में इनका अहम् भूमिका होती है। स्वभाव में नारीत्व एवं पुरुषत्व का विकास इन पर निर्भर करता है।

Parathyroid glands (उपकंठ ग्रंथियां) :- यह ग्रंथि कंठ ग्रंथि के बगल में होती है। इसका आकार बहुत छोटा होता है। लगभग 1" (एक इंच) की होती है। इससे निकले स्राव को Parathormone कहा जाता है जो शरीर के खून में कैल्शियम एवं फास्फोरस की मात्रा को निर्धारित करता है। यह शारीरिक सक्रियता एवं शिथिलता से सम्बन्धित है।

पैंक्रियास (Pancreas) :- यह ग्रंथि आमाशय के नीचे होता है। इसके Beta cell से Insulin नामक हार्मोन्स निकलता है तथा Alfa cell से Glucogon harmons निकलता है Blood Sugar के नियंत्रण में विशेष महत्व है। इसका संतुलित स्राव बहुत आवश्यक है। अन्यथा Blood Sugar (diabetes) हो जाता है कम स्राव से Hypoglycemia होता है व्यक्ति चिंतित एवं भ्रमित रहता है।

Scanned By Scanner Go

Nervous System (स्नायुमंडल) :- व्यक्तित्व के जैविक निर्धारकों में Nervous System काफी महत्वपूर्ण है। मनोवैज्ञानिकों की मान्यता है कि जिन लोगों का Nervous System अधिक विकसित होता है, वह व्यक्ति अधिक बुद्धिमान होगा है और उसे समायोजन में मदद मिलती है। इस संदर्भ में KEMPH (केम्प) नामक मनोवैज्ञानिक ने का अध्ययन काफी महत्व रखता है। केम्प के अनुसार व्यक्ति की सारी ऐन्द्रिक लालसाओं और आवश्यकताओं की उत्पत्ति Autonomic Nervous System द्वारा होती है, लेकिन मानव सामाजिक मर्यादाओं एवं अन्य बंधनों के चलते सारी आवश्यकताओं की पूर्ति से वंचित रह जाता है। इस तरह मानव अपनी आवश्यकताओं आदि की पूर्ति के लिए चिंतन प्रारंभ करता है ताकि वह समायोजित हो सके। इसलिए सोचना एवं समझने की क्रियाएँ Central Nervous System के द्वारा होती है। अतः समायोजन में Central Nervous System का महत्वपूर्ण हाथ होता है। जैसा कि हम जानते हैं, उचित समायोजन ही व्यक्तित्व का द्योतक होता है। इस प्रकार व्यक्तित्व के निर्धारण में सम्पूर्ण Nervous System की भागीदारी होती है।

बुद्धि (Intelligence) :- व्यक्तित्व का एक प्रमुख निर्धारक बुद्धि भी है। बुद्धिमान व्यक्ति आसानी से समायोजन स्थापित कर लेते हैं, जबकि कम बुद्धि वाले को अनेक दिक्कतें होती हैं। अतः बुद्धि को भी एक प्रमुख जैविक निर्धारक माना जाता है। परिस्थितियों को समझने और उचित अनुक्रिया करने में बुद्धि की काफी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बुद्धिमान व्यक्ति को Interaction का अधिक मौका मिलता है जिससे व्यक्तित्व में निखार आ जाता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि बुद्धि

Scanned By Scanner Go

व्यक्तित्व के विकास में कई कारकों का योगदान होता है। कुछ कारक जन्मजात होते हैं जिन्हें हम अनुवंशिक भी कहते हैं। इनमें से कुछ प्रमुख जैविक निर्धारकों की चर्चा ऊपर की गई है। लेकिन सचाई यह है कि व्यक्तित्व विकास केवल जैविक निर्धारकों की प्रतिफल नहीं है अपितु इसपर पर्यावरणीय निर्धारकों का भी प्रभाव पड़ता है, ~~यह प्रश्न जरूर~~ यह अलग बात है कि व्यक्तित्व विकास या निर्माण पर अनुवंशिक कारकों का अधिक प्रभाव पड़ता है या पर्यावरणीय कारकों का प्रभाव अधिक पड़ता है। यह प्रश्न आज भी अनुत्तरित है फिर भी यह तो कहा ही जा सकता है कि व्यक्तित्व के निर्माण में दोनों कारकों का हाथ होता है। अतः दोनों ही निर्धारक हैं और दोनों का अपना अपना महत्व है। ऐसी स्थिति में व्यक्तित्व को वंशानुक्रम और पर्यावरण का गुणनफल ही मानना उचित लगता है।

=

R Singh
30/4/21

Scanned By Scanner Go